

## भरतपुर जिले के कुम्हेर अभिवृद्धि केन्द्र की आकारिकी

### सारांश

नगर को आकारिकी के अन्तर्गत किसी कस्बे, नगर के विभिन्न कार्यों यथा प्रशासनिक, औद्योगिक, आवासीय, व्यापारिक, धार्मिक, शिक्षा एवं मनोरंजन में प्रयुक्त भूमि तथा उसमें लगे लोगों का अध्ययन किया जाता है। नियोजित नगर में उन कार्यों का जमाव अलग-अलग क्षेत्रों में होता है। जबकि अनियोजित नगर में कार्य एक-दूसरे से मिले हुए रहते हैं तथा इनका अलग-अलग क्षेत्रों में जमाव सामाजिक तथा आर्थिक शक्तियों का परिणाम होता है।

नगर पृथ्वी पर मानव निर्मित अधिवास है। इसका भीतरी भूगोल बहुत ही दिलचस्प होता है चूंकि इनका आकार काफी बड़ा होता है। इसलिए ये अपना अलग ही भीतरी भूगोल रखते हैं। यदि हम किसी बड़े नगर को देखें तो हमें दो बातें देखने को मिलेंगी, एक तो कहीं पर रिहायशी इमारतों की अधिकता देखने को मिलेगी तो कहीं पर दुकानें ही दुकानें और कहीं पर कारखानों का ही जमघट मिलेगा। इस प्रकार हमें नगर की भूमि का अलग-अलग ढंग से उपयोग होता हुआ दिखाई देगा। दूसरे, इमारतों का बाहरी रूप और उनका स्थान के अनुसार क्रम भी हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेगा। कहीं-कहीं पर मकान एक मंजिल के हैं, कहीं-कहीं आकाश से बातें करते हैं, कहीं मकान सड़कों के किनारे बसे हैं, कहीं कारखानें बस्तियों के बीच में बसे हैं, दुकानें रिहायशी क्षेत्र में प्रवेश कर गयी हैं, कहीं-कहीं पर गन्दी बस्तियों के बीच में बसे हैं, दुकानें रिहायशी क्षेत्र में प्रवेश कर गयी हैं, कहीं-कहीं पर गन्दी बस्तियों का विकास हो गया है आदि सब बातें हमें नगर के गठन को ही बताती हैं। इस प्रकार नगर में हमें औद्योगिक इकाइयों, व्यापारिक क्षेत्र, रिहायशी मकान भी देखने को मिलते हैं जो नगर की भूमि पर अपना विस्तार कर लेते हैं। इसके कारण नगर में विभिन्न प्रकार के भूमि उपयोग बन जाते हैं। जिनको हम नगरीय क्षेत्र या कार्यक्षेत्र का नाम देते हैं। इसमें नगर की भूमि का उपयोग तथा उस पर स्थापित इमारतों की भौतिक संरचना का अध्ययन करते हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा कुम्हेर अभिवृद्धि केन्द्र की आकारिकी पर प्रकाश डाला गया है।

**मुख्य शब्द** : आकारिकी, कार्यक्षेत्र, नगरीय क्षेत्र।

### प्रस्तावना

नगर के भीतर पायी जाने वाली विशेषताओं और प्रतिरूपों से इसका सम्बन्ध होता है। नगर के भिन्न-भिन्न घटक भाग, भिन्न-भिन्न तरह के आकारों और आकृतियों अथवा स्वरूपों का निर्माण करते हैं। अलग-अलग और सब मिलाकर भी नगर की संरचना की कुल तस्वीर या झलक ही उसकी आकारिकी कहलाती है।

ओ.पी.सिंह ने बताया है कि वास्तविक रूप में नगर के भीतर पाए जाने वाले भिन्न-भिन्न स्वरूप और संरचनात्मक प्रतिरूप उसकी आकारिकी का परिचय देते हैं। उनके अनुसार आकारिकी के अन्तर्गत नगर के भीतर पाई जाने वाली दो विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है। (i) नगर का भौतिक स्वरूप व व्यवस्था (ii) नगर की आंतरिक कार्यात्मक संरचना।

वर्तमान विशेषताओं के साथ-साथ समय के संदर्भ में भी इन विशेषताओं का विश्लेषण किया जाता है।

कुछ विद्वानों ने नगरीय आकारिकी की प्रथम विशेषता पर जोर दिया है, तो कुछ ने कार्यात्मक विशेषता पर। स्मेल्स ने बताया है कि आकारिकी को इमारतों और भूखण्ड के भौतिक स्वरूप व व्यवस्था के संदर्भ में आँका जाता है। यही नगरीय भूदृश्य बनाते हैं। इस भूदृश्य की कार्यात्मक व्याख्या भी नगरीय आकारिकी का ही एक अंग है।



**बिनेश कुमारी**  
पूर्व शोध छात्रा,  
भूगोल विभाग,  
एम.एस.जे. कॉलेज,  
भरतपुर

E: ISSN No. 2349-9435

# Periodic Research

प्रस्तुत शोध पत्र में भरतपुर जिले के कुम्हेर अभिवृद्धि केन्द्र की आकारिकी का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

## अध्ययन क्षेत्र की समस्या एवं उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र की अनियोजित आकारिकी की समस्याओं का उचित समाधान प्रस्तुत करना।
2. अध्ययन क्षेत्र के भावी विकास को ध्यान में रखते हुए सुनियोजित भू उपयोग का विकास करना।

## साहित्यावलोकन

ए. गीता रेड्डी ने सन् 2011 में 'Urban Growth Theories and Settlement System in India' में अधिवासों के प्रारूपों पर प्रकाश डाला गया है।

एम.जे. मोजले द्वारा सन् 2013 में पुस्तक 'Growths centres in spatial planning' में स्थानीय नियोजन में अभिवृद्धि केन्द्रों के महत्व पर प्रकाश डाला है।

पलांग डब्ल्यू यू द्वारा सन् 2015 में पुस्तक 'Planning for Growth : Urban and Regional Planning in China' में प्रादेशिक नियोजक पर प्रकाश डाला गया है।

अशोक कुमार द्वारा सन् 2016 में पुस्तक 'Urban and Regional Planning Education' में प्रादेशिक नियोजन पर प्रकाश डाला गया है।

रुषा वर्मा, अनुराधा सहाय, वी.पी.एन. सिन्हा द्वारा सन् 2017 में पुस्तक 'Introduction to Settlement Geography' का शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन में सहयोग लिया गया है।

## परिकल्पनाएं

1. किसी भी क्षेत्र का भूमि उपयोग उसकी आकारिकी को निर्धारित करता है।

2. किसी केन्द्र की आकारिकी उसके भावी विकास को निर्धारित करती है।

## शोध रूपरेखा

### प्रस्तुत शोध प्रपत्र में आंकड़ों के स्रोत एवं विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन क्षेत्र के सभी प्राथमिक आंकड़ों को शोधार्थी द्वारा सम्बन्धित विभागों से एकत्रित किया गया है।

कुम्हेर कस्बे में विद्यमान भू-उपयोग को निम्न प्रकार प्रस्तुत किया गया है—

### विद्यमान भू-उपयोग

वर्ष 2011 में कुम्हेर का कुल नगरीयकृत क्षेत्र 423.61 एकड़ है, जिसमें से 77.69 प्रतिशत क्षेत्र अर्थात् 329.10 एकड़ विकसित क्षेत्र है। विकसित क्षेत्र का लगभग 58.58 प्रतिशत आवासीय है। वाणिज्यिक भू-उपयोग में विकसित क्षेत्र का 8.27 प्रतिशत तथा औद्योगिक भू-उपयोग में विकसित क्षेत्र का लगभग 0.33 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त लगभग 9.70 प्रतिशत सार्वजनिक एवं अर्द्ध-सार्वजनिक तथा 2.44 प्रतिशत राजकीय एवं अर्द्ध-राजकीय भू-उपयोग के अन्तर्गत है। आमोद-प्रमोद भू-उपयोग में मात्र 1.43 प्रतिशत भूमि है। अतः यहाँ उद्यान एवं खुले स्थानों का अभाव है। परिसंचरण के अन्तर्गत 19.25 प्रतिशत क्षेत्र है। विद्यमान नगरीयकृत क्षेत्र का घनत्व लगभग 61 व्यक्ति प्रति एकड़ तथा विकसित क्षेत्र का घनत्व लगभग 79 व्यक्ति प्रति एकड़ है। निम्न तालिका में वर्ष 2011 में विभिन्न भू-उपयोगों के अन्तर्गत आने वाली भूमि को दर्शाया गया है —

तालिका— विद्यमान भू-उपयोग, कुम्हेर-2011

क्र.सं.	भू-उपयोग	क्षेत्रफल (एकड़ में)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत	नगरीयकृत क्षेत्र का प्रतिशत
1.	आवासीय	192.79	58.58	45.51
2.	वाणिज्यिक	27.23	8.27	6.43
3.	औद्योगिक	1.08	0.33	0.26
4.	राजकीय एवं अर्द्ध राजकीय	8.02	2.44	1.89
5.	आमोद प्रमोद	4.70	1.43	1.11
6.	सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक	31.94	9.70	7.54
7.	परिसंचरण	63.34	19.25	14.95
	<b>विकसित क्षेत्र</b>	<b>329.10</b>	<b>100.00</b>	<b>77.69</b>
8.	रिक्त भूमि/कृषि भूमि	72.96	—	17.22
9.	जलाशय / नदी-नाला आदि	21.55	—	5.09
	<b>नगरीयकृत क्षेत्र</b>	<b>423.61</b>	<b>—</b>	<b>100.00</b>

## आवासीय क्षेत्र

आवासीय उपयोग के अन्तर्गत 192.79 एकड़ भूमि है जो कस्बे के कुल विकसित क्षेत्र का 58.58 प्रतिशत है। आवासीय उपयोग के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्र है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार कस्बे की जनसंख्या 20296 है तथा वर्ष 2011 की जनसंख्या 23540 व्यक्ति है। वर्ष 2011 में कस्बे का आवासीय घनत्व 135 व्यक्ति प्रति एकड़ है।

वर्तमान नगर पालिका में 20 वार्ड है। बाहर के क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व कम है। यहाँ पुरानी बसावट अनियोजित ढंग से बसी हुई है। कस्बे के भीतरी भाग में

आवासीय भवन एक दूसरे से सटे हुए हैं। इस भाग में संकरी एवं टेड़ी-मेड़ी गलियाँ हैं। भीतरी भाग में सड़कों की चौड़ाई कम है एवं सामुदायिक सुविधाओं एवं खुले स्थलों का नितान्त अभाव है।

यहाँ पर कोई अधिसूचित कच्ची बस्ती नहीं है लेकिन कुछ बस्तियों में पक्की सड़कों, नालियों के अभाव व अन्य जन सुविधाओं की कमी के कारण कच्ची बस्ती जैसी स्थिति है।

## वाणिज्यिक क्षेत्र

कुम्हेर में वाणिज्यिक उपयोग के अन्तर्गत 27.23 एकड़ भूमि है जो विकसित क्षेत्र का 8.27 प्रतिशत है।

E: ISSN No. 2349-9435

# Periodic Research

कुम्हेर शहर में व्यावसायिक गतिविधियाँ मुख्य रूप से राज्य राजमार्ग संख्या 14 डीग-भरतपुर रोड़ व धनवाड़ा रोड़ तथा इसके आसपास के क्षेत्र में मुख्य रूप से केन्द्रित हैं। शहर में सौख रोड़ पर कृषि उपज मण्डी विकसित की गई है। एक छोटी सी सब्जी मण्डी व फल मार्केट नगर पालिका के समीप है। मुख्यतः व्यावसायिक गतिविधियाँ डीग-भरतपुर रोड़ इन्दिरा बाजार आदि पर है जिनमें कपड़े दवाईयाँ, जनरल स्टोर, किराना, हलवाई, हार्डवेयर, सैनेटरी व अन्य फुटकर दुकानें हैं जिनसे यहाँ के नागरिकों की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

## औद्योगिक क्षेत्र

कुम्हेर में कोई औद्योगिक क्षेत्र विकसित नहीं है जिसके अभाव में यहाँ औद्योगिक गतिविधियाँ विकसित नहीं हो पाई हैं। वर्तमान में लगभग 1.08 एकड़ भूमि औद्योगिक उपयोग में है जो विकसित क्षेत्र का 0.33 प्रतिशत है। शहर के विभिन्न भागों में कुछ तेल मिल की लघु इकाईयाँ व अन्य घरेलू उद्योग हैं।

## राजकीय एवं अर्द्ध राजकीय

कुम्हेर के उपखण्ड एवं तहसील मुख्यालय होने से राजकीय एवं अन्य सम्बंधित क्रियाकलापों ने नगर के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सर्वेक्षण के अनुसार कुम्हेर में 24 राजकीय एवं अर्द्ध-राजकीय व अन्य कार्यालय है। कस्बे में 2 केन्द्र सरकार के कार्यालय एवं 15 राज्य सरकार के कार्यालय संचालित हैं। केन्द्र सरकार के कार्यालयों में डाकघर, दूरसंचार व राज्य सरकार के कार्यालयों में उपखण्ड अधिकारी तहसील किला परिसर में, पी.डब्ल्यू.डी. कार्यालय सौख रोड़ पर, पुलिस थाना, पंचायत समिति, नगर पालिका आदि डीग रोड़ पर हैं। राजकीय एवं अर्द्ध राजकीय कार्यालय 8.02 एकड़ भूमि पर स्थित हैं, जो विकसित क्षेत्र का 2.44 प्रतिशत है।

## आमोद-प्रमोद उद्यान/ खुले स्थल

आमोद-प्रमोद सुविधाओं का इस कस्बे में नितान्त अभाव है। कोई भी पूर्ण रूप से विकसित उद्यान तथा पार्क नहीं है। सौख रोड़ पर एक छोटा सा कॉलोनी पार्क है जो पूर्ण रूप से विकसित नहीं है। इसके अतिरिक्त आवासीय क्षेत्रों में छोटे-छोटे खुले स्थल हैं। उक्त उपयोग हेतु कुल 4.70 एकड़ भूमि उपलब्ध है जो कुछ विकसित क्षेत्र का 1.43 प्रतिशत है।

## सार्वजनिक एवं अर्द्ध-सार्वजनिक सुविधाएँ

कुम्हेर में 31.94 एकड़ भूमि सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक सुविधाओं के उपयोग के अन्तर्गत आती है। जो कि विकसित क्षेत्र का 9.70 प्रतिशत है। इसके अन्तर्गत शैक्षिक सुविधाएँ, चिकित्सा सुविधाएँ, ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्थल, मेले व पर्यटन सुविधाएँ, अन्य सामुदायिक सुविधाएँ, जनोपयोगी सुविधाएँ, (जलापूर्ति, विद्युत आपूर्ति) आदि आते हैं।

## परिसंचरण

कुम्हेर में परिसंचरण भू-उपयोग के अन्तर्गत 63.34 एकड़ भूमि है जोकि विकसित क्षेत्र का 19.25 प्रतिशत है।

## रिक्त भूमि/ कृषि भूमि

कुम्हेर में रिक्त भूमि एवं कृषि भूमि के उपयोग के अन्तर्गत 72.96 एकड़ भूमि

## जलाशय/ नदी-नाला आदि

कुम्हेर में जलाशय एवं नदी-नाला आदि के उपयोग के अन्तर्गत 21.55 एकड़ भूमि आती है।

## निष्कर्ष

शोधार्थी द्वारा किये गये अध्ययन के आधार पर यह कहा जाता है कि कुम्हेर भरतपुर जिले का एक महत्वपूर्ण कस्बा है। कुम्हेर में पिछले दशकों में समुचित विकास योजना तथा समन्वित विकास कार्यक्रमों के अभाव में कस्बे का भौतिक स्वरूप बिगड़ता जा रहा है जिससे आवासीय एवं वाणिज्यिक क्षेत्रों में समानता नहीं है। अव्यवस्थित विकास, मिश्रित भू-उपयोग, जल निकास की व्यवस्था न होना, औद्योगिक कचरा, सड़क सम्बंधी समस्याएँ, गन्दगी की समस्या, पेयजल समस्या, सीवर लाइन की समस्या, परिवहन की समस्या आदि समस्याओं ने कस्बे में रहने व कार्य करने के वातावरण को काफी प्रभावित किया है।

अतः कस्बे में विद्यमान उक्त समस्याओं का समाधान अतिआवश्यक है ताकि कस्बे का सुनियोजित एवं व्यवस्थित विकास हो सके।

## सुझाव

कस्बे के घने आबादी क्षेत्र में कार्यरत घरेलू उद्योगों को सामान्यकृत भू-उपयोग योजना में अलग से अंकित नहीं किया गया है। कुम्हेर के आस पास अच्छी उपजाऊ भूमि होने के कारण यहाँ कृषि आधारित उद्योग के विकास की विपुल सम्भावनाएँ हैं। अतः शहर में औद्योगिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए औद्योगिक क्षेत्र विकसित किये जाने की नितांत आवश्यकता है।

कुछ विद्यालयों व महाविद्यालय में अपने स्वयं के खेल मैदान है जो अपर्याप्त हैं खेलकूद के लिए शहर में कोई स्टेडियम नहीं है।

कुम्हेर शहर ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन से सम्बंधित स्थलों की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसके प्रशासनिक, पर्यटन, वाणिज्यिक, शैक्षणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के केन्द्र के रूप में विकसित होने की सम्भावनाएँ हैं।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Smailes, A.E. (1960) The Geography of Towns' P.41*
2. *Singh, R.L. (1957) "Typical Rural Dwellings in the Umland of Banaraas" Vol. III.*
3. *Bansal, S.C. (2000)"Urban Geography" Minakshi Pub. Merath*
4. *Sharma, K.R.Vyas,P. (1967) "Rajasthan Ker Itihas ka sarvekshan, "Pancha Shil Prakashan, Jaipur.*
5. *Bijlani, H,V.1977 Urban Problems Centre for Urban Studies Institute of Public Administration, New Delhi.*
6. *A. Geeta Reddy (2011) Urban Growth theories and Settlement System in India.*
7. *M.J. Moseley (2013) Growth Centres in Spatial Planning*
8. *Fulong W.U. (2015) Planning for Growth: Urban and Regional Planning in China.*
9. *Ashok Kumar (2016) Urban and Regional Planning Education.*
10. *Usha Varma, Anuradha Sahay, V.P.N. Sinha (2017) Introduction to Settlement Geography.*